भूमि लुटिया झुमुरा

श्री कृष्णाय नमः

श्लोक

मुग्धं निपीतदुग्धं
दधिकणदिग्धं घनाघन स्निग्धम्।
अम्बरमिव तारकितं-
कंचन गोपबालकं वन्दे ॥१॥

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, जे चराचर गुरु नारायन, सर्वलोकहित कारणे, नन्दक मन्दिरे वेकत हुआ— कहों, कपट गोपवेशे, परम मंगल रूपे, नाना रसे खेलान कयकहों, जसोदाक मन सन्तोष करे, जैचन क्रीड़ा कयल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि।

प्रवेश गीत

राग आसोआरि। परिताल।

ध्रु०—खेलतु गोविन्द जसोदाकु संगे।
मानवि भाव देखावत रंगे॥

पद—सृष्टि स्थिति लय कारन जोइ। जाकेरि लीला जानत नहि कोइ॥
सोहि महेश्वर गोप कुमारा। लोक तारन हेतु भयो अवतारा॥
जोहि कृपामय देवक देवा। मुकुति विरञ्चन जाकर सेवा॥
नानन रसे खेले सोहि दयाला। कहय माधव गति बाल गोपाला॥२॥

सूत्र०—तदनन्तर, श्रीकृष्ण एक दिवसे, जसोदाक मन्दिर पसिए, क्षीर लवनु चुरि करिए कहों खायल, सोहि समय जसोदाक देखिये, भये जननिक माण्डिते, जैचे कपट कय कान्दिते लागल, ताहे देखह सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

श्लोक

नीतं नव नवनीतं
केन च पीतं पयः क्व मे मुरली ।
इति समुदीर्य लुठन्तं
भूमौ बालं नमामि गोपालम् ॥३॥
एवं भूतं भूमौ लुठन्तं गोपालं नमामि ।

सूत्र०—सकल नागर-चूड़ामनि, आपुन बालक वाणि, आड़ करिए, खीर लवनुक भाण्ड गढ़ाये, माटि लोटि, कैचे कान्दिते लागल, ताहे देखह सुनह, निरन्तर हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राग भड़ियाल । एकतालि ।

ध्रु०—भुमि लुटिया, कान्दे गोपिनाथ, भाण्डिते मावरे ।
चुरि करिया, खीर लवनु, खाया खालि घरे ॥

सूत्र०—ऐचन क्रन्दन सुनिए, जसोदा पुत्र स्नेहे, परम आकुल हुया पुछल ।

यशोदा—हे बालक, तुहुँ कि निमित्ते माटि लुटि क्रन्दन करह ?

कृष्ण—हे माइ जसोदे, ओहि भाण्डक मध्ये लवनु थेयाछिलु । ताहेक के निया गेल ? ओहि भाण्ड मध्ये, घन खीर थेयाछिलु । ताहेक के पान करल ?

पद—केवा निया खाइल मोर ए नव ल्वनि ।
एहि बुलि हुमहुमि कान्दे यदुमनि ॥
घन खीर थैयाछिलो तारो गेल खाया ।
एहि बुलिया कान्दे कानु भाण्डरि गड़ाया ॥

कृष्ण—हे माइ, हामु कि कहब ? हामार परम सुन्दर बाँसि, एथाये थैयाछिलो । ताहेक के लैया गेल ? आर हामार हैते कि रहल ?

पद—एथाये आछिल बाँसि केवा निल तारे ।
एतिनि प्रसाद मोर गेल एके बारे ॥

एहि बुलि गेहि पारिया कान्दे यदुराइ ।
कहय माधव गति बालक कानाइ ॥४॥

सूत्र०—ओहि बुलि जगतक ईश्वर श्रीकृष्ण, मायक माण्डिये, माटि लुटि क्रन्दन कय, रोस करिये रहल । ताहे पेखिए जसोदा पुत्रक स्नेहे, नानाविध काकुति करिए, कैचे सान्त करिते लागल, ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरिबोल हरिबोल ।

गीत

रागश्री (श्रीगान्धार) परिताल ।

ध्रु०—गोपाल सुनरे बाप रोस कर दूर ।
तोमार पायेर बालाइ लभुँ बापेर ठाकुर ॥

यशोदा—आहे पुता श्रीकृष्ण, तोहारि पायरे लागो, अहन अधरक बालाइ लभुँ, एहि स्याम सरिरक अवस्था देखिये, कैचे मरिए न जाओँ ? तोहारि ऐचन अपमान देखिये, हामार हृदि सहय नाहि । आइ बापु, रोस तेजि उठह ।

पद—मानिक जिनिया जले दुलानि अधर ।
रोस दुख भरे आखि भैगेल भामर ॥
कान्दिते कान्दिते पुता बड़ि पाइला दुख ।
नेत्रजले मलिन सुन्दर चान्द मुख ॥
हाटे बाटे गेल बाँसि सकल तोहारे ।
यमुनारे गेलो हामु नीर आनि बारे ॥
तोमार बाप नन्द घोस तओ नाहि घरे ।
तेखने लवनु खाइलो सकले बानरे ॥

यशोदा—हे पुता, तोहारि बानरे सकल लवनु खायल । तोहों हामार रोस करिए माटि लोटि कैचे क्रन्दन करसि । ओहि मानिक पुतलि सरीर, धूलि धूसरित भेला । इहा देखि हामार मने कहि दुख लागु । बाप क्रन्दन छोड़ह ।

पद—दुर्ज्जन बानरे दिला आपुनि आसंग ।
से खाइलो लवनु खानि मोरे केन संग ॥
खाइलो खाइलो मारिवो बानरा पाइले लाग ।
एखन कातर करो तेज रोस राग ॥
तोमार बानरे खाइलो मोरे किवा धारि ।
हामात रोसे बाजर गावे लागे मारि ॥
मानिक पुतलि तनु धुलाये धूसर ।
कान्दिते भागिल गला भैगेल बिकल ॥

सूत्र०—ओहि बुलि धुला भारि तुलि, कोले करिए, जसोदा जे बोलल ता सुनह ।

यशोदा—आहे पुता, हामार मन्दिरे, दधि दुग्ध लवनु, सम्पूर्ण, कोन वस्तु नाहि ? तोहों जत खाइते पारह, हामु ताहेक देवब । तोहो रोस दुख छोड़ह ।

कृष्ण—हे माइ, हामु क्षुधाये पीड़ित हयाछि । हामाक लवनु देह ।

यशोदा—आहे पुता, एखने गोवाल सबे दुध आनब । ताहेक हामु मथिवे । नवीन लवनु देवब । चिनि करपुर माखिए, खीरेर लाडू देवब तुहु ताहेक भोजन करबि । जदि तोहो हामार बचने संजात नाहि जावत, तब पड़ाक लोक साखि करह ।

पद—एखने आनिबो दुध मथिबो आपुनि ।
जत पार खाइबा दिबो ए नव लवनि ॥
खिरेर लाड़ु साजि दिब चिनि कर्पूर माखि ।
संजात नजापा पड़ार लोक करा साखि ॥
ए बोल सुनिया हरि एड़िल रोदन ।
धुला भाड़ि कोले करि मावे दिला तन ॥
तन पान करि हासि तोले नारायन ।
कहय माधव गति नन्देर नन्दन ॥५॥

सूत्र०—ओहि बुलि जसोदा, कृष्णक कोले तुलिए, तनपान कराइते लागल । श्रीकृष्ण जसोदाक कोले, जैचन भाव परकास कयल, ता देखह, निरन्तरे हरिबोल ।

गीत

राग श्याम परिताल ।

ध्रु०—जसोदा गोपाल कोले लिजे ।
बयन भरिले घन चुम्बन दिजे ॥

पद—कबहु भरि हरि चान्द बयने ।
पूरल मन पयोधर पाने ॥
कबहु बयने हेरि हरि हासे ।
जगतक जीव जसोदा कोले भासे ॥
सनक सनातन जाकर सेवा ।
जसोदा कोले सोहे सोहि देवा ॥
भकत बत्सल हरि दीन दयाल ।
कहय माधव गति बाल गोपाल ॥६॥

कथा—ऐचन परकारे श्रीकृष्ण मायक भाण्डिए, लवनु भुञ्जिवे, कोले चढ़ि, तनपान करिए, परम आनन्दे जैचे लवनु मागल, ताहे देखह सुनह, निरन्तरे हरिबोल ।

गीत

राग श्री । जतिमान ।

ध्रु०—मागे लवनु हरि जसोदाकु आगे ।
कर पाति बोलय लवनु भेरि लागे ॥

कृष्ण—आहे माइ जसोदे, हामाकु तुहु लवनु दिते अंगीकार करइछ । सोहि लवनु तोहों हामाक सत्वरे देह । आजु लवनु न पावा तोहाक छाड़ब नाहि । तोहों हामाक लवनु लहिए बारम्बार भाण्डियाछ, आजु छाड़ब नाहि ।

पद—पुरुबे बुलिया आछा लवनु दिवारे ।
सोहि लवनु माव लागय हामारे ॥
लवनु न पाइले माइ न छाड़िबो तोरे ।
गुनि चावा बारे बारे भाण्डिआछा मोरे ॥

यशोदा—हे बाबू श्रीकृष्ण, आजु लवनु रहे नाहि। आन दिवसे देवब।

सूत्र०—पुनः श्रीकृष्ण मायक आँचर धरि कहो बोल। आहे माइ जसोदे।

कृष्ण—आहि माइ जसोदे, तोहारि वचने संतोष नाहि। एति बेरि हामाकु लवनु
देवइ। लवनु न पाया तोहाक, कतिहो आहिते नाहि देवब।

पद—मायर आञ्चोरे धरि बोले नारायने।
लवनु न पाया आजि छाड़िबो कमने॥
थे आछिल हयंगमि हरि पुजिबारे।
एछाइलै नपाइ माइ दिलो आनि तारे॥

सूत्र०—कृष्णक निबन्ध देखिए, हरिक पूजा निमित्त हैयंगामि, नवीन नवनु थेयाछिल।
ताहेक जसोदा कृष्णक देलइ। सोहि लवनु भोजन करिये, श्रीकृष्ण जेचन
नृत्य करलु, ता देखइ।

पद—नवीन लवनु पाया परम कौतुके। चराचर गुरु हरि भुञ्जिला उत्सुके॥
लवनु भुञ्जिया नाचे त्रिजगतक पति। कहय माधव हरिपदरेनु गति॥७॥

सूत्र०—हे समाजिक लोक, सोहि श्रीकृष्ण चराचर वन्दित ब्रह्मा आदि देवता सब सदाये
सेवत, महामहा अञो जाहेक तुष्ट करिते नाहि पारत, सोहि परमेश्वर, भकतिक
वश्य हया, गोपारिक ठामे, लवनु मागिए, परम आनन्दे भोजन करल। ऐचन
भकतिक महिमा, इह जानि कृष्णक मने धरिए, निरन्तर हरिबोल हरि।

इति श्री भूमि छुटिया लवनु मागि खोवा, बालक कृष्णक, यात्रा नाट, सम्पूर्ण
भेल। श्रीकृष्णक चरणे समर्पल।

—:०:—

पिम्परा-गुचुरा-कुमुरा

माधवदेव कृत

श्री कृष्णाय नमः

श्लोक

कस्त्वम्बाल बलानुजस्त्वमिह किं मन्मन्दिराशंकया
बुद्धं तन्नवनीतकुम्भविवरे हस्तं किमर्थं न्यस्तः ।
कर्तुं तत्र पिपीलिकापनयनं सुप्ताः किमुद्बोधिताः
बाला वत्सगतिं विवेक्तुमिति संजल्पन् हरिः पातु वः ॥१॥

अपिच

वदने नवनीतगंधवाहं वचने तस्करचातुरीधुरीणम् ।
नयने कुहकाश्रुनाश्रितो चरणे कोमलताण्डवं कुमारम् ॥२॥

गीत

राग श्री गान्धार । परिताल ।

सूत्र०— ध्रु०—मोर घरे के ना तुमि बोलय गुवालि ।
बलाइर कनिष्ठ मञि बोले बनमालि ॥

गोपी—आहे बालक, हामार मन्दिरे तुहुँ के ?

कृष्ण—हामाक नाहि चिनह ? हामु बलभद्रक कनिष्ठ भाइ ।

पद—गोपी बोले एथा तुमी आइला कि कारने ।
मोर घर बुलि आइलों बोले नारायने ॥

गोपि—आहे, तुहु बलाइक कनिष्ठ ? आः जानल कि निमित्त एथा आवल भिक ।

कृष्ण—आहे गोपि, हामु हामार मन्दिर बुलि आवल, पंथ भिछुरल ।

पद—जानिलौं आसिला तुमि घर न जानिया ।
लवनु कलसे केने आछा हात दिया ॥

गोपी—हे कृष्ण, तुहु नाहि जानि आवल । इहात कोनो दोष नाहि । हमार लवनु कलसि भितरे, केचन हस्त निवेसिये थिक ?

कृष्ण—आः हामाक बड़ दोष पावल । ओहि पिपिलिका सब लवनु नास कयल, इहाक दूर करिते हात दिया आछि ।

पद—हरि बोले गोपि बड़ दोष पाइलि आछि ।
पिम्परा गुचाइते लागि हात दिया आछि ॥
गोपि बोले उपकार करि आछ भाल ।
किसक जगाइला मोर निद्रार छवाल ॥

गोपी—हे कानाइ, तुहुँ हामाक महा उपकार कयल । आः ओहि निद्राक बालक कि निमित्त जगावल ?

कृष्ण—हे गोवारि, ओहि बालक समे धेनु राखल । हामार एक बाछरू नाहि पावल । ताहेक पुछिते ओहि बालक जगावल ।

पद—कानु बोले वत्स मजि खुजिया न पाइलौं ।
तारे पुछिबारे तोर छवाल जगाइलौं ॥
गोपि बोले सुन अरे ठेन्टन कनाइ ।
तोहार मुखत देखो लवनु गंधाइ ॥

गोपी—हे कानाइ, तुहुँ बड़ि नागर ! हामाक सब लवनु खाइ, कुन्ठा बात कहइछ । जब तुहुँ लवनु नाहि खावल, तब वचन बोलिते तोहारि वदन हन्ते केछन लवनुक गन्ध बाझ होइ ।

कृष्ण—हे गोवारि, तुहु बड़ि दारुण हृदय । आपुन जिह्वा राखिते नापारि । आपुन गृह लवनु खावल । अब भतारक भये, हामाक अपयश देवत । हामार गृहे लवनु के पुछत ? खाइबाक न पाइ ! तोमारि घरे चोरि करि लवनु खावल ?

पद—कानु बोले सुन अरे गोपि निदारुनि ।
तोहार मुखत गंध तइसे सुरुनि ॥
सुनिया गोपिनि खुजि न पाइला उत्तर ।
मिछा मारि गोपिरे भाण्डिला दामोदर ॥
सकल कलार गुरु प्रभु नारायन ।
गोपिरे भाँडिया तुमि ए कुन जतन ॥
कहय माधव हरि सरन तोम्हार ।
मिछा मातिवार प्रभु कमल बेवहार ॥२॥

सूत्र०—हे सामाजिक, श्री कृष्णक ऐछन वानि सुनि, गोपि उत्तर नाहि पावल; परम लज्जित होइ पुनु श्रीकृष्णक जे बोलल ता सुनह ।

गोपी—हे कानाइ, तोहाक हामु उत्तरे नाहि पावल । आजु तोहारि मायक आगु सब कथा कहिए, हामु तोहाक जे जानु ता करब ।

सूत्र०—ओहि बोलि गोपि पड़ाक गोपिसबक डाक दिये, एक थान होइ, सबहि मिवा, यसोदाक आगु कहल ।

गोपी—हे माइ जसोदे, तोहारि बालक कानाइ, हामाक जे जे अपकार करत, ता सुनह । हामाक गृहे दधि दुग्ध रहये नाहि । श्रीकृष्ण बालक सहिते नास कयल ।

अपर गोपी—हे माइ, ओहि कृष्णक कथा कत कहब ? हामार संचित लवनु चुरि करि खाइ । जोरवाक माण्ड भांगि पेहलावल ।

अपर गोपी—जे माइ, ओहि कानाइक हामु चोर धरल । हामाक भाण्डिये, बहुत उत्तर देलह । हामाक जे बोलल, से कथा कहिते हामारे से लाज । ओहि कानाइक कथा कत कहब, श्रीकृष्णक निमित्ते हामु रहये ना पारि ।

यशोदा—हे बालक यादव, ताहों गुवालक पाड़ा कतिहु जावब नाहि । तोहारि अपयश हामु कत सहब ? हामु जे कहि ता सुनह ।

गीत

राग श्री । परिताल ।

ध्रु०—यादव न जायो न जायो तुमि गुवालर पाड़ा ।
कत ना सहिबो मञि तोम्हार झगड़ा ॥

पद—केहो बोले चुरि करि खाइलो लवनी ।
सब दधि दूध खाइलो बोले केहु अनी ॥
केहु बोले भाङ्गिलो ओखार मेरि भाण्ड ।
एमर बयसे तुमि एतमान चाण्ड ॥
मोहोर घर दधि मन देख यदि ।
प्रति दिने दिने बहाइबाक पारों नदि ॥
तथापि नोजोड़े हरि खाइबाक तोम्हारे ।
चुरि करिबारे जाय परार घरे ॥
नानान सुरस करि नानान वाखरे ।
जतन करिया साजु खाइबाक तोम्हारे ॥
जत परमाने खाव पेट भरि भरि ।
दुखिर छवाल जेन फुरा चुरि करि ॥
आर यदि जाव तुमि गुवालेर वारि ।
हेमने मारिबों जेन गाथे रहे खारि ॥
कहय माधव माइ गालि पार कारे ।
औहितो निरन्ता हरि आतमा सवारे ॥४॥

यशोदा—हे पुता, तोहारि बाप नन्द सब गुवालक राजा । हामु ताहेर पतनि । हामाक उदरे जनमि तुहु ऐचन दुर्जन भेलि । हामाक गृहे दधि नाहि ? दूध नाहि ? लवनु नाहि ? सन्देश नाहि ? कौन वस्तु नाहि ? तोहाक हामु खाइते नाहि देसि ? तुहु कि भोजन नाहि करत ? कांगालक छवाल जैचन तुहु बेड़ाव । आजु तोहाक हामु सिखा देवब । गोयालक पाड़ाक जैचन नाहि जाव ।

संगि—हे माइ, तुहु काहेक ऐचन गारि देसि । औहि जगतक आतमा, ब्रह्मा रुद्रादि देवता सबो जाहेर आज्ञाधारि, परम सादरे बहत, ताहेक तुहु नियम करिते चाव उचित नहे ।

कृष्ण—हे माइ, तुहु कतिहो गारि नाहि देवब । तुहु बारम्बार जत अपमान दियाछ, ताहेक हामु सहइछि, अब वचनेक बुलि ता सुनह ।

गीत

राग भटियालि । एक ताल ।

ध्रु०—आओ माइ गालि तुमि ना पारिबा मोरे
जत अपमान मोरे, दिया आछ बारे बारे ।
माले आमि सवा आछौं तारे ॥

पद—कोन छार पुरातन, से करा दुइर धन ।
कलसि भाङ्गिल देखि रागे ।
हैवाक नरेल मोर, जेन पाइले खन्दचोर,
बान्धिला गोरुर लेया पागे ॥
एइ अपराध खानि, नसैला नन्देर रानि,
आदर सहिबा तुमि कि ।
तोम्हार लक्षन देखि, जगते जानिलो तुमि,
जेन बड़ मानुषर झि ॥
तप जप यज्ञ यत, ताहि दान पुन्य व्रत,
आछिला जनम आन्दुकुरि ।
आमि पुत्र हुआ आसि, से दोष करिलों दूर,
आबे तोम्हार आमाते चातुरि ॥
आति निराकनि जानि, बुवाकाले तुपजिलों,
वृद्ध काले पुत्र भैलो एथा ।
सामान्य नारियो जाने, वृद्ध हया न जानिला,
आपुन पुत्रर दाया बेथा ।

जगत दाकिया चोर, दुर्वश राखिला मोर,
नकैला आम्हार कोइ काम ।
जत उपकार गुन, सकले डाकिया दिला,
आम्हार लवनु चोरा नाम ॥
राजार कुमार हुया गरु चारि खाओ भात,
दुर्गम संकट बने - बने
तथापितो आमि भाल, बोलाइबाक न पारिलों,
आरो भाल बोलइब कमने ॥
सहिया थाकिले भाल, सकले जगते बोले,
उचित बोलिते लागे दन्द ।
जत अपमान दुख, सकले सहिया थाकि,
तथापि आमि से भेलों मन्द ॥
अपमान सहिबाक, नपारि पलाया जाइबों,
कंसेर नगरि मधुपुरि ।
आम्हार नपाया लाग, कान्दिया मरिबा पाछे,
सकल भावना हैव चूरि ॥
जाहार मायार अन्त, ब्रह्मा हरे नपावन्त,
हेन हरि चातुरि खेलाइ ।
कहय माधव प्रभु, आर किछो न बुलिया,
तोम्हार जननि दुख पाइ ॥५॥

कृष्ण—हे माइ, तुहु बिस्तर नाहि बोलब । हामु तोहारि भर्त्सनि (भर्त्सना) सहब नाहि । कोन छार पुरातन कलसा भांगल, कहा दुइक धन हानि कयल । ताहेक गावे नाहि सहल । आर कि सहब ? तोहारि भाव देखि सबलोक जानल । तुहु जैचन सब मातुपक भि । आः हे माइ, तुहु जनम आन्धुकुरि रहय थिक । हामु पुत्र हुया से दुख दूर कयल । अब हामाक आगु चातुरि लगावब । आ, कि दारुन हृदय । आपुन पुत्रक बाथा नाहि जानत ।

जगत दाकिथे, हवनु चोर नाम देलह । आर हामाक करिते कि रहल ? अब अपमान सहिबाक नपारि पलावब । तोहारि भावना चूर करब । हामाक नपाइ पाछ कान्दि मरब ।

संगी—हे परमेश्वर, आवर किछो नाहि बोलब । तोहारि जननि दुख पाय, तोहारि मायार अन्त ब्रह्मादि देवता सबो नाहि पावत । सामान्यक कि कहब ! हे परमेश्वर, तोहारि अभय चरने, कोटि परनाम करोइँ ।

सूत्र०—हे सामाजिक, परम ईश्वर श्रीकृष्ण कृपा गुने अवतरि, नाना बिनोद कयल । इहाक श्रवन-कीर्तन करि सुखे संसार तरब । आनि कृष्ण चरने मनथिर करि निरन्तरे हरिबोल हरिबोल ।

पिम्परा गुचावा झुमुरा समाप्त ।